इन्सानियत का अन्जाम

सफ़वतुल उलमा मौलाना सै0 कल्बे आबिद साहब ताबा सराह

आज जिस तरफ भी नज़र उठती है तबाही और बर्बादी के देव इन्सानियत को निगल जाने के लिए मुँह खोले दिखाई देते हैं। बर्बादियों के अंगारे और साँप, दिल की चाहतें, ऐश परस्ती और आराम की चाहत की आग अख़लाक़ और किरदार को जलाकर ख़ाक किये दे रही है। दिल की चाहतें रूहानियत का गला घोंटकर उसको मौत की नींद सुला देने पर लगी हुई हैं।

हर हुकूमत अपने बजट का बड़ा हिस्सा आग उगलने वाले और बर्बाद कर डालने वाले हथियारों पर ख़र्च कर रही है। मुक़ाबले और दौड़ का वह शौक़ जो फितरत का दिया हुआ था जिसका मक़सद था कि इन्सान नेकियों, अच्छे किरदारों, इल्म और अख़लाक़ में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करें जिसका मतलब था ''फस्तबिक़ुल ख़ैरात'' अच्छाईयों में एक दूसरे से आगे निकल जाओ ताकि कोई एक क़दम उठाए तो दूसरा दो क़दम आगे बढ़ जाए। नतीजे में पूरी इन्सानियत तरक़्क़ी करती चली जाए। अब यह दौड़ ऐटम बम, हाइड्रोजन बम, बीमारियों फैलाने वाले और बर्बाद कर देने वाले हथियारों में हो रही है। ऐसे हलाक करने वाले हथियारों के गोदाम बढ़ते ही चले जा रहे हैं जिनमें एक–एक या सिर्फ कुछ ही ज़मीन को अंगारों में बदल देने के लिए काफी हैं मगर फिर भी मुक़ाबला और दौड़ जारी है।

आज शैतानियत ख़ुश होती नज़र आ रही है, शैतान झूम–झूमकर ''हल मिन मुबारिज़न'' (है कोई मुक़ाबला करने वाला) का नारा लगा रहा है तो फिर क्या इन्सानियत दम तोड़ देगी, शैतानियत ग़ालिब आ जाएगी, आख़री जीत शैतान की ही होगी? लेकिन यह तो अल्लाह का मक़सद और अल्लाह के वादे के ख़िलाफ है।

1– जब शैतान ने दरख़्वास्त पेश की थी कि क़यामत के दिन तक की छूट दे दे। उसी वक़्त यह एलान कर दिया गया था कि क़यामत तक नहीं तुझे एक मालूम वक़्त तक ही छूट दी जा सकती है। जिसके बाद शैतानियत को मिट जाना है क्योंकि इन्सान को फलना–फूलना है।

2– क़ुर्आन ने साफ–साफ एलान किया है कि ''ख़ुदा अपने नूर को पूरा करके ही रहेगा चाहे काफिर कितना ही नापसन्द करें।'' और ''अल्लाह इस के सिवा हर चीज़ से इन्कार करता है उसको इसके सिवा कुछ बर्दाश्त नहीं कि उसका नूर पूरा होकर रहे।''

ख़ुदा का नूर क्या है? दीने हक़, अल्लाह की पहचान, किरदार व अमल की पाकीज़गी, इन्साफ और बराबरी।

शिर्क व कुफ़्र, बिद्अत व गुमराही, ज़ुल्म और चोरी वग़ैरा अगर अंधेरा नहीं तो फिर आयतुलकुर्सी में मोमिनों को किस अंधेरे से निकालने और किस रौशनी में पहुँचाने का वादा किया गया है। क्या जब तक शिर्क और कुफ़्र, ज़ुल्म और बिद्अत, बेईमानी और बेइन्साफी, बद किरदारी और बदअख़लाक़ी का हलका सा साया भी मौजूद है क्या यह कहा जा सकता कि अल्लाह का वह इरादा जिसका ''नूरल्लाहि बिअफवाहिहिम'' और ''यअ्बल्लाहु इल्ला अयं युतिम्मा नूरिही'' के मज़बूत

अलफाज़ में एलान किया गया था पूरा हो गया। और अल्लाह की रौशनी पूरी होने की आख़री मन्ज़िल में पहुँच गई। और अगर नहीं तो मानना पड़ेगा कि एक दिन आएगा जब यह अल्लाह क वादा पूरा होकर रहेगा।

3– अल्लाह का एक वादा है मोमिनों से जिसका कुर्आन में इस तरह बयान हैः ''अल्लाह ने ईमान वालों और अच्छे काम करने वालों से यह वादा फरमाया है कि वह उनको ज़मीन की ख़िलाफत अता फरमाएगा। उसी तरह जैसे पहले भी दे चुका है। उनको इस दीन पर पूरी–पूरी तरह अमल करने का बदला देगा जो उनके लिये पसन्द किया गया है कि उनके लिए हर तरह के डर और ख़तरे को पूरी तरह अम्न व अमान से बदल देगा बस वह सिर्फ अल्लाह की इबादत करें। इस आयत में कुछ बातें ग़ौर करने लायक़ हैं–

क– ''अल्अर्ज़'' से जब तक ज़हन में या बाहर कोई इशारा न हो पूरी ज़मीन मुराद ली जाएगी। इसलिए पूरी ज़मीन की ख़िलाफत देने का वादा है ज़मीन के किसी एक हिस्से का नहीं।

ख– इसी तरह पूरी ज़मीन में दीन के फैलने का वादा है, दीन का फैलना यानी दीनी के अहकाम का जारी होना शरीअत के क़ानून का लागू होना।

ग– हर तरह का डर दूर करके पूरे अम्न और शांति का क़ायम होना, वह अम्न नहीं जो वक़्ती तौर पर ताक़त के ज़ोर से क़ायम किया जाए। और दबी हुई चिंगारी या ख़राब मवाद की तरह जगह–जगह पर फोड़े की तरह सामने आए।

घ– बस मेरी इबादत करेंगे और ऐसी इबादत जिसमें किसी चीज़ की मिलावट न होगी। शौतान की भी नहीं और चाहत और लालच की भी नहीं।

अगर यह वादा सच्चा है और यक़ीनन सच्चा है। सच्चों के सच्चे का वादा है और अभी तक पूरा नहीं हुआ और यक़ीनन पूरा नहीं हुआ क्योंकि मुसलमानों ने अपनी हुकूमत के आख़री ज़माने में भी जिसके लिए बहरे ज़ुल्मात में घोड़े दौड़ाने पर फख़्र है ज़मीन के फैलाव को देखते हुए एक छोटे से हिस्से पर क़ब्ज़ा किया था।

और क़ब्ज़े का मतलब भी बस टैक्स वसूल करके ख़ज़ानों को भरना और गुलामों और कनीज़ों का राजधानी में बेड़ियों में जकड़े हुए आना, लूटी हुई दौलत को ऐय्याशियों में और कनीज़ों को हैवानी जज़्बात पूरे करने के लिए इस्तेमाल करने के सिवा क्या था। क्या उस ज़माने में भी पूरी ज़मीन पर क़ब्ज़ा था, क्या इस्लामी हुकूमत में शरीअत का क़ानून सही तरह लागू था दूसरी जगहों को छोड़िये क्या राजधानी में भी सच्चे मोमिन के लिए अम्न व अमान था। क्या सरदारों की ऊँची आवाज़ें, शराब से भरे जाम, मज़लूमों की आहें और ज़ालिमों की ठहाके मारती हुई हंसी। शैतान की इबादत थी या अल्लाह की सच्ची इबादत। तो जब अभी तक अल्लाह का वादा पूरा नहीं हुआ अल्लाह और उसके रसूल की सच्चाई पर ईमान भी है तो इस के सिवा कोई रास्ता नहीं कि उस दिन का इन्तिज़ार किया जाए जब ख़ुदा का यह वादा पूरा होने वाला है।

कहा जाता है कि आयत में वादा है कि उसी तरह ख़िलाफत देंगे जैसे पहले वालों को दी थी। तो पहले वालों को कब पूरी ज़मीन की ख़िलाफ़त मिली थी जो मुसलमानों को मिलेगी। लेकिन ख़ास बात यह है कि वादा मुकम्मल हुकूमत का नहीं हुकूमत हासिल करने के तरीक़े के बारे में है। यह नहीं कहा गया है कि इतने ही हिस्से की हुकूमत दूँगा जितनी पहले वालों को दी थी। वादा यह है कि उसी तरह दूँगा जिस तरह

पहले वालों को दी थी। यानी यह हुकूमत दुनिया वालों के वोट की बख़्शी हुई नहीं थी बल्कि यह ख़िलाफत आदम (अ0), नूह (अ0), दाऊद (अ0) की तरह मेरी दी हुई होगी इलेक्शन की नहीं, सेलेक्शन होगा।

4– हम ने ज़बूर में ज़िक्र (ख़ुदा की बातें या तौरेत) के बाद लिख दिया है कि यक़ीनन ज़मीन के वारिस मेरे नेक और अच्छे किरदार वाले बन्दे होंगे। क्या मतलब? ज़मीन के किसी छोटे हिस्से से, किसी छोटी हुकूमत के? तो नेक बन्दों की इसमें क्या ख़ूबी। क्या फिरऔर, नमरूद, चंगेज़ वग़ैरा मालिक नहीं होते रहे। इसलिए जैसा कि लफ्ज़ ''अलअर्ज़'' से मालूम होता है कि पूरी ज़मीन की मीरास है वह एलान जो तौरेत में मौजूद, ज़बूर में जिसका बयान, क़ुर्आन जिसको नक़्ल कर रहा है वह अब तक पूरा हुआ? और अगर नहीं पूरा हुआ तो कभी न कभी उसको ज़रूर पूरा होना है।

5– क़ुर्आन मजीद में दो जगहों पर ज़ोर देकर एलान है कि अल्लाह ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ इसी लिए भेजा कि उनका दीन तमाम दूसरे ग़लत दीनों पर ग़ालिब आ जाए चाहे शिर्क करने वाले कितना ही नापसन्द करें, चाहे काफिरों को कितनी ही यह बात नापसन्द हो।

क्या सच्चे दीन ने तमाम झूठे दीनों को मिटा दिया, क्या इस्लाम हर दीन पर ग़ालिब आ गया। अगर नहीं और अल्लाह के रसूल के भेजने का मक़सद यही बयान किया है तो यक़ीनन आख़िर में अल्लाह के मक़सद को पूरा होना है और एक वह वक़्त आना है जब सभी झूठे दीन दुनिया से मिट जाएँ और इस्लाम और सिर्फ इस्लाम का झण्डा लहरा रहा हो।

अच्छा आइये अब आयतों से नज़र हटाते हुए यह देखिये कि फितरत के क़ानून और पैदाइश का अन्दाज़ जिसको क़ुर्आन ने अल्लाह की सुन्नत कहा है जिसके लिए एलान है ''अल्लाह की सुन्नत में कभी बदलाव नहीं होगा।'' वह सुन्नत जो पूरी काएनात में जारी है और जिससे इन्सान भी अलग नहीं। सूरा आअ्ला की शुरु की आयत ''उस बुज़ुर्ग व बड़ी हस्ती के नाम की तस्बीह पढ़ जिसने पैदा किया और ठीक किया, जिसने तैय किया और मुक़द्दर किया''।

बनाने और पैदा करने, मुक़द्दर करने और हिदायत देने का मतलब है हर चीज़ को उसके हिसाब से ख़ूबियाँ देना, पूरे होने का वक़्त तैय करना और बनावट के हिसाब से उसकी हिदायत करना।

आईये पैदाईश का तरीक़ा देखिये कि वह भाप और गैसों के दल बदल जो अस्ल काएनात हैं, जिनका मतलब क़ुर्आन ने ''वहिये दुख़ान'' से बयान किया है। जिसमें चाँद, सूरज, सितारे, सैय्यारे तमाम कहकशाएँ ग़रज़ पूरी काएनात सिमटी हुई थी। जब अल्लाह ने पैदा करने का इरादा फरमाया तो भांपों को इस तरह बांटा कि नई–नई कहकशाएँ, नये–नये शम्सी निज़ाम बनते चले जाएँ। जैसा कि क़ुर्आन में इरशाद हैः सब ज़मीन व आसमान एक–दूसरे में लिपटे हुए और जुड़े हुए थे। हमने उनको अलग किया। हमारा शम्सी निज़ाम भी एक छोटे से सैय्यारे की तरह ज़मीन की शक्ल में फितरत के झूले में झूल रहा है और उसमें ख़ूबसूरत झूले में काएनात का शहज़ादा यानी इन्सान परवरिश पा रहा है। आज तो दुनिया जानती है कि वह माद्दा जो काएनात की बुनियाद है, तरक़्क़ी के रास्ते पर चलने वाला है, माद्दे का कमाल था कि ऐसी ज़मीन बने

जिसके सीने पर दरयाओं और समुन्द्रों की शक्ल में पानी करवटें ले और हवा के इशारे पर चलता हो। ज़मीन और पानी का कमाल था कि यह सांस लेते हुए जानदार की शक्ल इख़्तियार करे। ज़िन्दगी का कमाल था कि उठते हुए इन्सान की मन्ज़िल बने। माद्दा ख़ुदा की चाहत के मातहत सैकड़ों करवटें बदलता हुआ इस क़ाबिल हुआ कि इन्सानी रूह का मरकज़ बना।

इन्सान में भी पैदाईश का तरीक़ा न बदला। वह ज़िन्दगी का कीड़ा जो इतना छोटा था कि बिना टेलिस्कोप के देखा न जा सकता था लेकिन अपने अन्दर ख़ूबियों की दुनिया समेटे हुए था। माँ के पेट के मुनासिब माहोल में तरक़्क़ी करके जनीन बना और जब माँ के पेट की घिरी हुई दुनिया में तरक़्क़ी की जगह न रही तो बच्चे की शक्ल में ज़मीन पर आया। पैदा हुआ बच्चा अच्छी हवा पानी और खाने के सहारे तरक़्क़ी के रास्तों पर चलता हुआ जवानी की शक्ल में मन्ज़िले कमाल को पहुँचा। इससे हटकर पूरी इन्सानियत कमाल की तरफ बढ़ती हुई नज़र आती है। वही इन्सान जो बिना कपड़ों के था और जानवरों की तरह ग़ारों में ज़िन्दगी गुज़ारता था उसकी हिफाज़त के हथियार, उसके नाखुन और दाँत थे आज तरक़्क़ी करता हुआ सितारों से बातें कर रहा है और उसकी हिम्मत की बड़ाई कह रही है

"सितारों से आगे जहाँ और भी हैं"

मगर इन्सान में फरिश्ते या जानवर की तरह एक ही ख़ूबी नहीं है इसमें कुदरत ने फरिश्ते और जानवर दोनों की ख़ूबियों को समा दिया है। इसमें एक वह माद्दी पहलू है जिसकी तरफ इशारा करते हुए शैतान ने कहा था कि– "क्या मैं उसको सजदा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है" और दूसरी वह रूहानी ख़ूबी है जिसके लिए अल्लाह फरमाता है "मैंने उसमें अपनी रूह फूँकी" अभी सारी की सारी तरक़्क़िया उसके माद्दी और हैवानी ख़ूबी की है, अभी तक उसका रूहानी अन्दाज़ छुपा हुआ है। क्या इन्सान की रूहानी ताक़त के हिसाब से पैदाईश का तरीक़ा बदल जाएगा, अल्लाह की सुन्नत बदल जाएगी, क्या कुदरत को यह गवारा होगा कि इन्सान अपने माद्दी जज़्बात को पूरा करने के लिए ऐटम बमों और हाइड्रोजन बमों से ज़ीमन को आग के गोले में बदल कर सब कुछ ख़त्म कर दे और इन्सान, इन्सान की हैसियत से अपनी मन्ज़िले कमाल तक न पहुँचे। यह हरगिज़ नहीं हो सकता यह अल्लाह की सुन्नत में बदलाव है जिसके लिए इरशाद है:– "अल्लाह की सुन्नत को हरगिज़ बदला नहीं जा सकता और हरगिज़ अल्लाह की सुन्नत को घेरा नहीं जा सकता है" इन्सान की रूहानियत और उसका इन्सान की हैसियत से पूरा होना उसी वक़्त हो सकता है जब दुनिया में हक़ीक़ी अम्न और ईमान का चलन हो, अक़ीदे और आमाल हर तरह के झूठ की मिलावट से पाक हो कर रिवाज पाएँ।

आइये एक और तरीक़ा भी देखिये। दुनिया के सभी बड़े–बड़े मज़हब और मशहूर दीन, हमारे मुल्क का हिन्दू धर्म, ईरान का पुराना ज़रतश्ती मज़हब, ईसाईयत, यहूदियत ग़रज़ दुनिया के सभी मज़हब इस पर एक हैं कि आख़री कामियाबी इन्सानियत की होगी। शैतानियत की नहीं। शैतान की क़िस्मत में हार है यज़दानियत को फलना–फूलना है। आख़िर में कोई न कोई बड़ा सुधार वाला, इन्साफ और बराबरी का मसीहा बनकर आएगा जो बुराईयों और बदअख़लाक़ियों को बर्बाद करके दुनिया को जो जहन्नम का नमूना थी जन्नत का बाग़ बना देगा। किसी बड़े

सुधारक का ख़याल सभी पुराने मज़हबों में पाया जाना तक़रीबन ज़रूरी बातों में से है।

अब आइये देखें इस आख़री दौर में आने वाले मुस्लेहे आज़म, मुन्तज़िरे आलम के बारे में हदीसें क्या कहती है। तो बजाए इसके कि मैं अपनी तरफ से कुछ लिखूँ वहाबियों के मशहूर व मारूफ आलमी इदारे (जिसको सऊदी अरब की हुकूमत चलाती है) मोअ्तमरे आलमे इस्लामी के शोबे अलजमउल फ़िक़्हुल इस्लामी जिसका काम फ़िक़्ही फतवे जारी करना है। हम इस सिलसिले में केनिया से आए हुए एक सवाल का जवाब कुछ साल पहले (जो 1976 ई0) में दिया है इसको लिख रहे हैं। यह फतवा शैख़ मुहम्मद मुन्तसिर किनानी ने लिखा है और इस शोबे से मुताल्लिक़ 15 और दूसरे आलिमों ने भी इसको सही कहा है।

सलाम के बाद

एक कीनी मुसलमान के जवाब में जिसने महदी–ए–मुन्तज़र, उनके ज़ाहिर होने के ज़माने, वह जगह जहाँ से ज़ाहिर होंगे और इस सिलसिले की दूसरी क़बूल की जाने वाली बातों के बारे में सवाल किया है। (तो जवाब यह है कि) वह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हसनी अलवी फातमी महदी का इन्तेज़ार कर रहे हैं। इनका ख़ुरूज आख़री ज़माने में होगा जो क़यामत की बड़ी निशानियों में से एक निशानी है! वह पच्छिम की तरफ से ज़ाहिर होंगे, मक्का मुकर्रमा, में रुक्न व मक़ामे काबा, काबा और हज्रे अस्वद के बीच कुलज़ुम के पास उनकी बैअत की जाएगी। उनका ज़हूर उस वक़्त होगा जब ज़माने में फितना व फसाद, कुफ्र व ज़ुल्म आम हो चुका होगा। वह ज़माने को इन्साफ और बराबरी से उसी तरह भर देंगे जैसे वह ज़ुल्म और ज़्यादती से भरी हुई थी। पूरी दुनिया पर हुकूमत करेंगे और सारी दुनिया उनकी इताअत में सर झुका देगी। वह सात साल हुकूमत करेंगे। जनाब ईसा (अ0) उनकी शहादत के बाद (आसमान से) उतरेंगे और दज्जाल को क़त्ल करेंगे (कुछ रिवायतों की बुनियाद पर) या उन्हीं के साथ नाज़िल होंगे और बाबे लुद जो फिलस्तीन में है दज्जाल के क़त्ल में इमाम की मदद फरमाएंगे। (इमाम महदी अ0) उन बारह खुलफाए राशिदीन के आख़री ख़लीफा होंगे जिनकी ख़बर सही हदीसों में दी गई है।

इसके बाद फतवे में रसूल के उन सहाबियों और ताबईनों और एतेबार वाली किताबों का बयान है जिनमें यह ख़बर आई है। उन किताबों का बयान है जो अहलेसुन्नत के आलिमों ने ख़ास तौर पर इमाम ज़माना (अ0) के सिलसिले में लिखी हैं। फिर लिखते हैं: वह आख़री तफ़सीली मज़मून जो इस बारे में हमारी जानकारी और ख़बर में लिखा गया है वह मदीना युनिवर्सिटी के एडिटर का मक़ाला है जो युनिवर्सिटी से निकलने वाले पर्चे की कई इशाअतों में लिखा गया है।

बहस का नतीजा लिखते हैं: ''हाफिज़ों और मुहद्दिसों से नस कर दी है कि महदी (अ0) के बारे में कुछ सही हदीसें और कुछ ऐसी जिनमें ज़्यादातर ख़बरे मुतवातिर है जिनका मुतावातिर होना और सही होना क़तई और यक़ीनी है।

महदी के निकलने का अक़ीदा वाजिब है यह अहलेसुन्नत व जमाअत के अक़ीदों में दाख़िल है। इसका इन्कार करने वाला सुन्नत से अन्जान या अक़ीदे के एतेबार से बिद्अती है।

इस फतवे के बाद अहलेसुन्नत हज़रात के तरीक़ों से रिवायत की जाने वाली हदीसों के बारे में कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। बस इतनी बात साफ है कि अहलेसुन्नत की रसूल (स0) से

रिवायत की हुई कुछ हदीसों में यह भी है कि ''उनके बुजुर्ग बाप का नाम मेरे बुजुर्ग बाप के नाम ही जैसा होगा'' और कुछ रिवायतों में है कि ''वह मेरे बेटे हसन की औलाद से होगा'' इसी बुनियाद पर शैख़ मुहम्मद मुन्तसिर लेबनानी ने इमाम का मुबारक नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह और आपको हसनी लिखा है। हालांकि शियों के नज़दीक सभी के यहाँ आपके बाप का नाम इमाम हसन असकरी है और आप हसनी नहीं हुसैनी हैं। इस इख़्तेलाफ की वजह देखने में रिवायत करने वाले का शक है। रसूल (स0) ने फरमाया होगाः ''उसके बाप का नाम मेरे बेटे इमाम हसन (अ0) के नाम की तरह होगा'' रिवायत की किताबत में नून का नुक़्ता रह गया और इब्नी के बजाए पढ़ने वाले ने अबी पढ़ा। इसी तरह रसूल (स0) ने फरमाया होगा ''वह उसके बेटे होंगे'' जिसका नाम हसन होगा और रिवायत करने वाला समझा इससे मतलब है कि वह इमाम हसन (अ0) की औलाद में होंगे। और इसकी दलील यह है कि अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम से रिवायत होने वाली मुतवातिर हदीसों में साफ़ है कि आप हुसैनी और इमाम हसन असकरी के बेटे हैं। घर वाले ही घर की बातों को बेहतर समझ सकते हैं। इसलिए अहलेबैत की रिवायतें इसकी वज़ाहत के लिए बहुत अच्छा रास्ता हैं।

□□□

बक़िया .... अहलेबैत की मुहब्बत और इताअत

रखवाई जाती थीं। आख़िर में हज़रत (अ0) ने फरमायाः ''ख़ुदा की क़सम, ऐ जाबिर! कोई शख़्स अल्लाह के दरबार में इताअत के बिना क़रीब नहीं हो सकता और हमारे पास जहन्नम की आग से बचाने का कोई परवाना नहीं है और न अल्लाह के मुक़ाबले में किसी की दलील चल सकती है। जो अल्लाह की इताअत करे वह हमारा दोस्त है और जो अल्लाह की नाफ़रमानी करे वह हमारा दुश्मन है। और हमारी मुहब्बत का फ़ायदा सिर्फ अमल और परहेज़गारी से हासिल हो सकता है।

चौथी हदीसः

उमर बिन ख़ालिद।

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) ने फरमायाः ''ऐ आले रसूल के शियो! तुम्हें तो दुनिया के लिए मिसाल होना चाहिए कि आगे बढ़ने वाले और पीछे रहने वाले सब तुम्हारी तरफ़ पलट कर आएँ।''

फिर फ़रमायाः ''ख़ुदा की क़सम! हमारे पास अल्लाह की तरफ से जहन्नम की आग से बचाने का परवाना नहीं है और न हमारी अल्लाह से कोई रिश्तेदारी है। न अल्लाह के मुक़ाबले में कोई दलील चल सकती है और न अल्लाह के दरबार में क़रीब होने का इताअत के सिवा कोई रास्ता है। जो तुम में से अल्लाह की इताअत करने वाला हो उसे हमारी मुहब्बत फ़ायदा पहुँचा सकेगी और जो तुम में से अल्लाह की नाफ़रमानी करता रहेगा उसे हमारी मुहब्बत के दावे से कोई फायदा नहीं पहुँच सकता। ख़बरदार धोखा न खाओ। ख़बरदार धोखा न खाओ।''